

International Journal of Geography, Geology and Environment

P-ISSN: 2706-7483

E-ISSN: 2706-7491

NAAS Rating (2026): 4.5

IJGGE 2026; 8(5): 17-22

www.geojournal.net

Received: 09-02-2026

Accepted: 15-03-2026

मनीषा खम्पा

पी०एच०डी० शोधार्थी, भूगोल
विभाग, सरदार भगत सिंह राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर
(ऊधम सिंह नगर) कुमाऊँ
यूनिवर्सिटी नैनीताल, उत्तराखंड,
भारत

प्रो० पूनम रौतेला

भूगोल विभाग, सरदार भगत सिंह
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
रुद्रपुर (ऊधम सिंह नगर) कुमाऊँ
यूनिवर्सिटी नैनीताल,
उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author:

मनीषा खम्पा

पी०एच०डी० शोधार्थी, भूगोल
विभाग, सरदार भगत सिंह राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय, रुद्रपुर
(ऊधम सिंह नगर) कुमाऊँ
यूनिवर्सिटी नैनीताल, उत्तराखंड,
भारत

वन संसाधन तथा वन संरक्षण की भूमिका : जनपद पथौरागढ़ का वश्लेषणात्मक अध्ययन

मनीषा खम्पा, प्रो० पूनम रौतेला

DOI: <https://www.doi.org/10.22271/27067483.2026.v8.i5a.748>

सारांश

प्रकृति हमें कई रूपों में संसाधन प्रदान करती है। यह संसाधन मनुष्य के जीवन का अ भन्न अंग है, तथा मनुष्य इन्हीं से अपनी जरूरतों की पूर्ति करता है। वन जो हमें प्रकृति से प्राप्त होता है, प्रकृति में सार्वभौमिक रूप से व्याप्त है। वनों द्वारा दी गयी स्वच्छ हवा मनुष्य की जीवन रचना का निर्माण करते हैं तथा मनुष्य के लिए आजीवन वक्री प्रदान करते हैं। प्राचीन समय से ही मनुष्य वनों पर निर्भर रहा है। वनों से मनुष्य ऑक्सीजन का सेवन करता है। प्राचीन काल से लेकर आज तक वन, मानव को एक सुसज्जित वातावरण प्रदान करे हुए हैं। मानव प्राचीन काल से ही प्रकृति पर आधारित था जब मनुष्य आदिमानव की अवस्था में था तथा तब भी वन मानव के रहने के लिए घर, पहनने के लिए अपने वृक्ष की पत्तियाँ प्रदान करता तथा, जो मानव की मूलभूत आवश्यकता है।

कुटुम्बशब्द: प्रकृति, वन, मानव, संसाधन

1. प्रस्तावना

वन अतीत से ही मानव के ज्ञान – विज्ञान एवं समस्त क्रियाओं का स्रोत रहा है। संस्कृति के प्राथमिक चरण में मानव पूर्ण रूप से प्रकृति पर निर्भर था। संस्कृति- उत्कर्षण के साथ मानव की आवश्यकता बढ़ती गयी जिससे प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव बढ़ता गया। मनुष्य अपने निजी स्वार्थ के लिए सांस्कृतिक उत्प्रेरक वनों को काटता गया। वह जंगली जीवन का परित्याग कर सुसंस्कृत जीवन- यापन करने लगा। वर्तमान समय में मनुष्य के अनेक प्रयोगों एवं प्रयोज्य वस्तुओं में वन के उपादनो का प्रयोग हो रहा है। जनसंख्या वृद्धि से जीव- जंतुओं एवं वन्य- वस्तुओं के मांग में वृद्धि होती गयी। वन विनाश के कारण इनका क्षरण होता गया। एक के बाद एक वनों का विनाश होता गया तथा वन संसाधनों पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा।

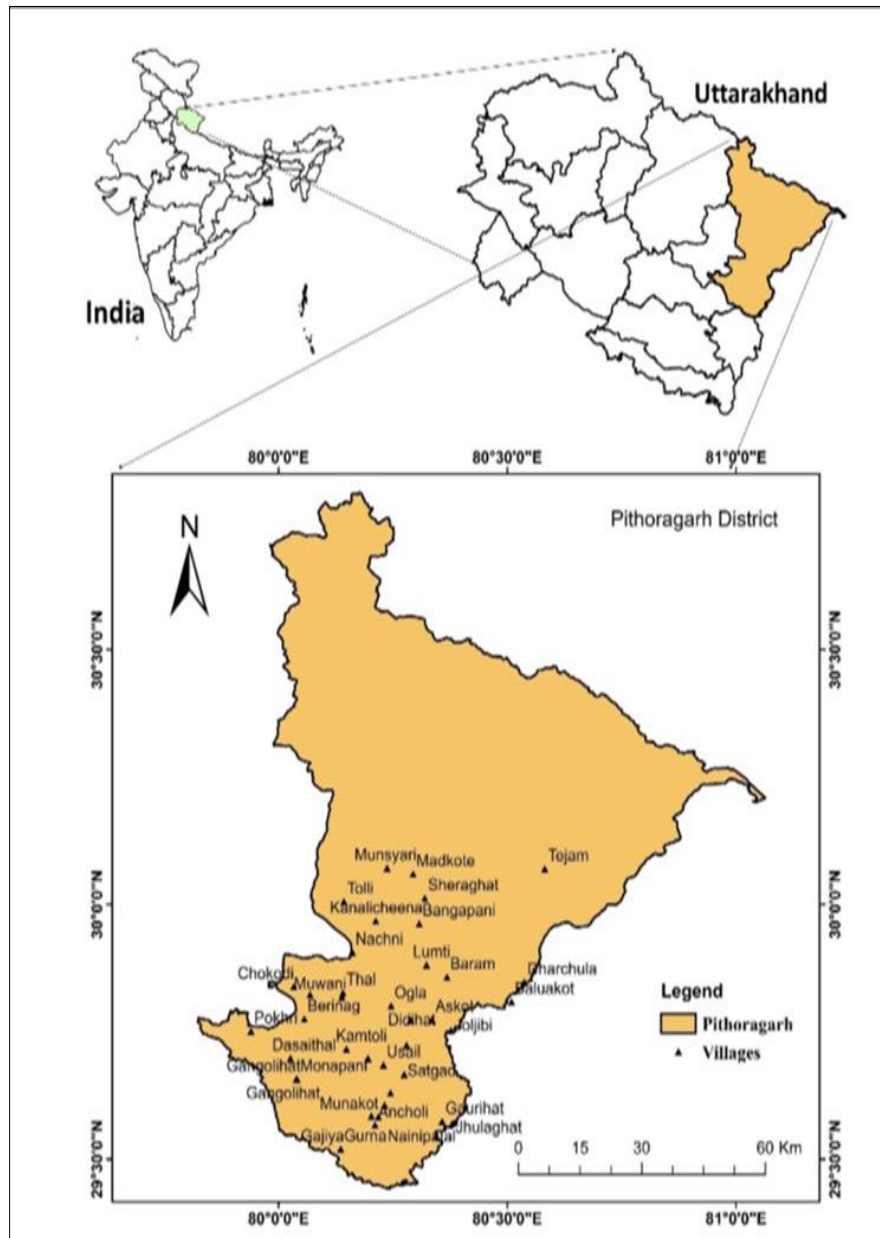
वन संसाधनों को जैव- विविधता का भंडार माना जाता है जो जीवमंडल में असंख्य पारिस्थितिक तंत्रों और सम्बन्धित कार्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों में भी वृक्षों एवं वन संसाधन के महत्व का उल्लेख किया गया है जिसमें कहा गया है की एक वृक्ष दस पुत्रों के बराबर होता है और ना केवल मानव जाति और पृथ्वी के लिए बल्कि इसे मानव के समान एवं जैविक जीव के रूप में भी मानता है इसके अतिरिक्त यह जीवन रूपों के लिए ऊर्जा और पदार्थ की निरंतर आपूर्ति के लिए पृथ्वी के समग्र विकास के लिए भी प्रासंगिक है। वन संसाधन कार्बन सिंक के लिए एक माध्यम के रूप में भी करते हैं जो जैव विविधता के लिए भी महत्वपूर्ण है।

2. अध्ययन क्षेत्र

जनपद पथौरागढ़ उत्तराखंड के कुमाऊँ मण्डल के अंतर्गत आता है। जनपद पथौरागढ़ उत्तराखंड राज्य का सीमांत पूर्वी जनपद है। इस जनपद की स्थापना 24 फरवरी 1960 में की गयी। इससे पूर्व यह अल्मोड़ा जिले के अंतर्गत सम्मिलित था। जनपद पथौरागढ़ का अक्षांशीय

विस्तार $29^{\circ} 27' 58''$ से $30^{\circ} 48' 45''$ उत्तर तथा देशांतरिय विस्तार $79^{\circ} 48' 10''$ पूर्व से $81^{\circ} 5' 55''$ पूर्व तक है। जनपद की उत्तर से दक्षिण तक की लम्बाई 150 किलोमीटर है। पूर्व से पश्चिम की चौड़ाई 119 किलोमीटर है। जनपद की भौगोलिक क्षेत्रफल 7216 वर्ग किलोमीटर है। जो उत्तराखंड के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 13.58% है। जनपद की उत्तरी सीमा ही

भारत की अंतराष्ट्रीय सीमा बनाती है। जो तिब्बत (चीन) तथा पूर्वी सीमा नेपाल को स्पर्श करती है। पश्चिमी सीमा बागेश्वर एवं चमोली जनपद तथा दक्षिणी सीमा चम्पावत एवं अल्मोड़ा जनपद को स्पर्श करती है। जनपद के पूर्व में काली नदी बहती है जो नेपाल से सीमा बनाती है।



श्रोत: गूगल मैप

चित्र 1: जनपद पिथौरागढ़ का स्थिति मानचित्र

3. आँकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत शोध आँकड़ों द्वितीयक श्रोत पर आधारित है। जिसके अंतर्गत विभिन्न विभागों जैसे वन विभाग पिथौरागढ़, जिला सांख्यिकीय कार्यालय पिथौरागढ़ तथा पुस्तको, समाचार पत्रों व भारतीय वन सर्वेक्षण विभाग द्वारा आँकड़ों को संकलित किया गया।

4. अध्ययन का उद्देश्य

अध्ययन के निम्न उद्देश्य है-

- जनपद पिथौरागढ़ में वन आवरणों तथा वन संसाधनों का अध्ययन करना।
- अध्ययन क्षेत्र में वन संसाधनों की भूमिका का अध्ययन करना
- वन संसाधनों के महत्व व लाभ के लिए जागरूकता लाना।
- अध्ययन क्षेत्र में वन संरक्षण का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

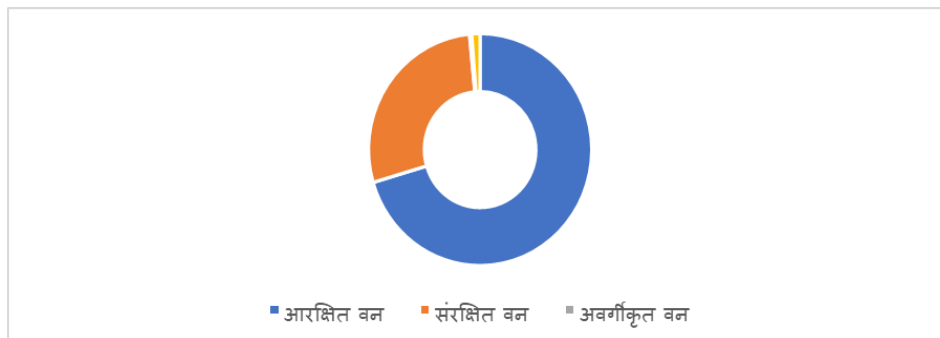
5. उत्तराखंड में वन संसाधन

उत्तराखंड का क्षेत्रफल 53,483.36 वर्ग किमी^० है। 18वें वन रिपोर्ट के अनुसार राज्य में वनों का क्षेत्रफल 3,811.66 वर्ग हेक्टेयर है। जो राज्य के कुल क्षेत्रफल का 63.51% है। हिमालयी राज्य होने के कारण यहाँ की उच्चावच में विषमता पाई जाती है। जिसका अनुसरण विभिन्न प्रकार की वनस्पतियाँ करती है।

क्षेत्र में वनों पर चट्टानों की कोणीय झुकाव की मात्रा, पहाड़ी ढाल की दिशा आदि का भी प्रभाव पड़ता है तथा वनों का वितरण सामान्य नहीं है। पार्श्व ढाल एवं तराई क्षेत्र में वनस्पति आवरण अधिक तथा अधिक ऊँचाई वाले भागों में वनस्पति आवरण कम है। वन क्षेत्र के अंतर्गत वन प्रकार निम्न है-

सारणी 1: वनों के प्रकार

वन प्रकार	कुल % में
आरक्षित वन	71.11
संरक्षित वन	28.30
अवर्गीकृत वन	0.35
कुल	100

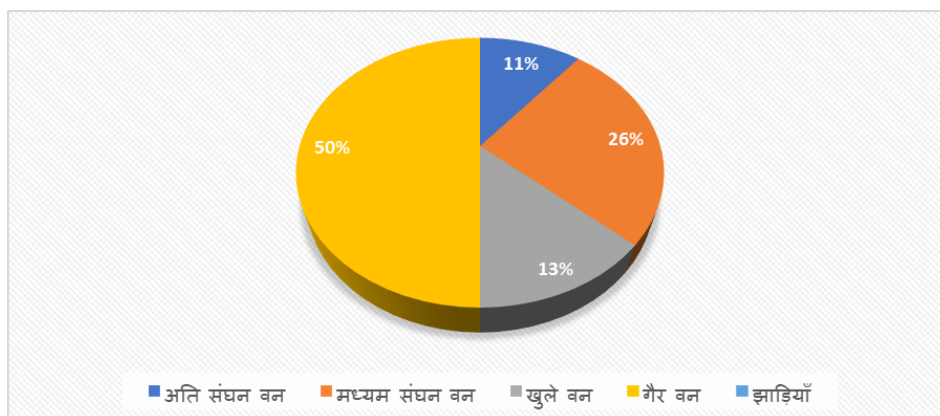


श्रोत : उत्तराखंड परीक्षा वाणी

चित्र संख्या 2

सारणी 2: वन क्षेत्र

वन क्षेत्र	क्षेत्रफल किमी ^०	कुल % में
अति संघन वन	5,266.58	9.85
मध्यम संघन वन	12,517.63	23.40
खुले वन	6,519.62	12.19
झाड़ियाँ	412.88	0.77
गैर वन	24,303.83	45.44



श्रोत: फारेस्ट सर्वे ऑफ़ इंडिया

चित्र संख्या 3

6. जनपद पिथौरागढ़ में वन आवरण तथा वन संसाधन

वन आवरण से तात्पर्य ऐसे वन क्षेत्र से है जो मुख्यतः वृक्षों से आच्छादित है। समस्त आरक्षित वन, वन पंचायत, सिविल वन,

निजी वन, झाड़ियों का समूह तथा अवर्गीकृत क्षेत्र, हिम शिखर, अन्य चारागाह, बंजर भूमि तथा छोड़े गये खेत जिसने वन का स्वरूप लिया हो, सभी वन भूमि के अंतर्गत आते हैं। जनपद में

वन संसाधनों का भंडार है। यहाँ पर विभिन्न प्रकार की वन सम्पदा पाई जाती है। जो आजीविका के क्षेत्र में महत्वपूर्ण माने जाते हैं। यहाँ के वनों में विभिन्न प्रकार की जड़ी- बूटियाँ पाई जाती हैं, जो आर्थिक क्षेत्र से महत्वपूर्ण योगदान प्रस्तुत करती हैं। इस क्षेत्र की अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण है, तथा अपनी आवश्यकता के लिए वनों पर पूर्ण निर्भर है।

सारणी 3: जनपद में वन आवरण क्षेत्रों की स्थिति

वन क्षेत्र	क्षेत्रफल (वर्ग किमी०)
अति संघन क्षेत्र	518.02
मध्यम संघन क्षेत्र	978.53
खुला वन	640.78
योग	2,137.33

सारणी 4: जनपद में वनों के प्रकार की स्थिति

वन क्षेत्र	वन भूमि हैक्टेयर
आरक्षित वन	79853
संरक्षित वन	460297
योग वन भूमि	540150

श्रोत; वन विभाग कार्यालय पिथौरागढ़

7. जनपद पिथौरागढ़ में वनों के प्रकार

कुँमाऊँ के वनस्पति वनों का वर्गीकरण प्रथम बार वर्ष 1927 में श्री ए० ई० ओस्मास्तन द्वारा अपने किताब फारेस्ट फ्लोर ऑफ़ कुँमाऊँ में दिया गया जिसमें वर्तमान पिथौरागढ़ वन विभाग के अंतर्गत चिड़ वन, बाज वन, तिमसू वन, खरसू वन, निम्न स्तरीय रागा वन, कैल वन, सुरई वन, देवदार वन, मिश्रित ठोस प्रकाष्ठ के वन, भोजपत्र वन, उच्च स्थलीय रागा वन, हिमाद्रि झाड़ीदार, पार हिमालयी नदी तटीय झाड़ी क्षेत्र व पार हिमालयी पहाड़ी झाड़ी क्षेत्रों के बारे में प्रतिपादित किया गया है।

1. उष्ण कटिबन्धीय आद्र पर्णपाती वन (Tropical moist deciduous forests)

इस प्रकार के वन मैदानी साल के विपरीत पर्वतीय क्षेत्रों, गर्म घाटियों नीम ऊँचाई के नदी नालों के किनारे सिन्धु तल से 450 से 1000 मीटर की ऊँचाई तक पाए जाते हैं। इसमें कन्जूर, हल्दू, तुन, शीशम, खैर, जामुन, सँदन, मदार, सेमल, बोरंग, साज, हरड, आवला कहीं कहीं साल आदि विभिन्न प्रजातियों के वृक्ष मिश्रित रूप से विद्यमान होता है।

2. उपोष्ण चौड़ी पत्ती वन (Subtropical boardleaved forests)

इस प्रकार के वन 750 से 1600 मीटर की ऊँचाई पर मुख्य रूप से गोरीगंगा घाटी की गर्म क्षेत्रों पर पाए जाते हैं। इसमें कन्जूर, हल्दू, तुन, खिन्ना, शीशम, खैर, जामुन, सादान, मदार, सेमल, बोरंग, साज, आदि उष्ण कटिबन्धीय प्रजातियों के अतिरिक्त रुमौल, धुमौल, कौल, बाज, कतौज, पद्म, महल आदि उपोष्ण क्षेत्र की प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं। अधोगुल्म में किल्मोड़ा, घिंघारू, हिसलू आदि झाड़ी प्रजातियाँ भी पाई जाती हैं।

3. उपोष्ण चीड़ वन (Subtropical pine forest)

इस प्रकार के वन सबसे अधिक क्षेत्रफल में फैला हुआ है। यह चीड़ प्रजाति के शुद्ध वन है तथा ये 1000 से 2000 मीटर की

ऊँचाई में प्रायः दक्षिणी ढालों में पाए जाते हैं। उत्तरी ढालों में यह बाज तथा अन्य प्रजातियों के साथ तथा कभी-कभी अन्य शुद्ध रूप में भी पाए जाते हैं। चीड़ वनों में घास बहुतायत में होता है जिससे यह वर्षाकाल में चरान में मुख्य क्षेत्र बन जाता है तथा सर्दियों के शुरू में इन वनों से व्यापक मात्रा में घास का कटान ग्रामीणों द्वारा किया जाता है।

4. हिमालयी आद्र शीतोष्ण वन (Himalayan moist temperature forests)

यह 1300 से 2700 मीटर की ऊँचाई में पाए जाने वाली शंकुधारी एवं चौड़ी पत्ती के वन हैं जो ठंडी जलवायु में तथा नमीयुक्त क्षेत्रों में अधिकतर पाया जाता है। इस प्रकार के वन निम्न ऊँचाईयों पर उत्तरी व पूर्वी ढालों में पाया जाता है। उच्च स्थलीय क्षेत्रों में यह अन्य अभिमुखों में भी पाया जाता है। इन क्षेत्रों में वार्षिक वर्षा 1500 मिमी से अधिक होती है। इसके अंतर्गत बांज वन, तिमसू वन, आद्र देवदार वन, कैल वनवन, सुरई वन, उतीस वन, खरसू वन, रियाज वन आदि पाई जाती हैं। इन वनों में वनाग्नि की समस्या कम रहती है इसके अंतर्गत हिमालयी शीतोष्ण चारागाह क्षेत्र भी आते हैं।

5. हिमालयी शुष्क शीतोष्ण वन (Himalayan dry temperate forests)

यह मुख्य हिमालयी श्रृंखला के उत्तरी अभिमुख में 2700 से 3300 मीटर की ऊँचाई पर पार हिमालयी क्षेत्रों के मिलानी व नदी तटीय क्षेत्रों में पाया जाता है। जहाँ वार्षिक वर्षा 1000 मिमी से कम होती है। यहाँ वृक्ष आवरण छोटे झुंडों में ही पाया जाता है व अत्यधिक बर्फबारी व तेज हवाओं के कारण वृक्षों का आकार भी सामान्य से छोटे होते हैं। विभिन्न प्रकार के झाड़ियाँ भी यह पाई जाती हैं।

6. उप हिमाद्रि वन (Sub alpine forest)

यह मुख्यतः 3000 से 3300 मीटर की ऊँचाई में पाए जाते हैं यहाँ पर खरसू, भोजपत्र, समरू व रागा के मिश्रित वन पाए जाते हैं। विभिन्न प्रकार की जड़ी-बूटियाँ, झुला आदि इस प्रकार के वनों में अधिक मात्रा में पाया जाता है इन वनों में पुनरुत्पादन संतोषजनक है। वनाग्नि की घटनाएँ काफी कम हैं तथा भेड़-बकरियों के चुगान से भी इन वनों में कोई दुष्प्रभाव नहीं है।

7. आद्र हिमाद्रि गुल्म (Moist Alpine forest)

यह 3300 से 5000 मीटर की ऊँचाई में पाई जाने वाली हिमाद्रि चारागाह व गुल्म क्षेत्र है जो स्थायी बर्फली क्षेत्रों या चट्टानी शिखरों से लगे हुए होते हैं। ये उच्च हिमालयी चारागाह होते हैं जिसमें कई क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के बौने झाड़ियाँ के गुल्म होते हैं। उत्तराखंड का राज्य पुष्प ब्रह्मकमल भी इन्हीं क्षेत्रों में पाया जाता है। यह क्षेत्र उच्च हिमालयी चरवाहों व भेड़ पालकों का ग्रीष्मकालीन प्रवासस्थल है।

8. शुष्क हिमाद्रि गुल्म (Dry Alpine scrub)

यह 3300 से 4700 मीटर की ऊँचाई में पाया जाने वाला शुष्क चारागाह क्षेत्र है जिसमें घास व अन्य प्रजातियों का पतला

आवरण होता है नमी की कमी तथा वर्षा की कमी के कारण है।
इस प्रकार के चारागाहों में पुनरुत्पादन काफी कम पाया जाता

सारणी 5: जनपद में वनों के प्रकार

वनों के प्रकार	ऊँचाई मीटर में
उष्ण कटिबन्धीय आद्र पर्णपाती वन	450- 1000 m
उपोष्ण चौड़ी पत्ती वन	750-1600m
उपोष्ण चीड़ वन	1000- 2000m
हिमालयी आद्र शीतोष्ण वन	1300-2700m
हिमालयी शुष्क शीतोष्ण वन	2700-3300m
उप हिमाद्रि वन	3000-3300m
आद्र हिमाद्रि गुल्म	3300-5000m
आद्र हिमाद्रि गुल्म	3300-4700m

श्रोत: Management Plan Pf Pithouragrh Forest Division 2011-22

8. जनपद पिथौरागढ़ में वन पंचायतें

कई वन क्षेत्रों को पूर्व से ही ग्रामीणों द्वारा प्रबंध किया जाता था तथा उनमें स्थानीय नियम व कानून चलते थे।
ऐसे वन क्षेत्रों को लट पंचायत कहा जाता था जिसकी किसी प्रकार की वैधानिक स्थिति नहीं थी। 1931 में प्रथम बार कुमाऊ वन पंचायत नियमावली लागू होने के बाद कई श्रेणी 1

के आरक्षित वनों तथा कई सिविल वन क्षेत्रों में नियमानुसार वन पंचायतों का गठन हुआ। इसके बाद वन पंचायत नियमावली संशोधित होते रहे तथा वर्तमान में उत्तराखंड वन पंचायत नियमावली 2005 लागू है। जनपद में अभी वन पंचायतों की संख्या १५६६ है।
वन पंचायतों का राजिवार स्थिति निम्न तालिका में दिया गया है-

सारणी 6: पिथौरागढ़ वन विभाग के वन पंचायतों का राजिवार क्षेत्रफल

क्रम संख्या	उप प्रभाग	राजि का नाम	वन पंचायतों	का क्षेत्रफल है०	
			आरक्षित वन	संरक्षित वन	योग
1		पिथौरागढ़	47.80	11184	11232
2		डीडीहाट	98.70	14174	14273
3	डीडीहाट	अस्कोट	109.30	15771	15880
4		धारचूला	0.00	81334	81334
	वन उप	प्रभाग डीडीहाट	255.80	122463	122719
5		मुनस्यारी	2287.00	140886	143173
6	बेरीनाग	बेरीनाग	692.80	4145	4838
7		गंगोलीहाट	1034.68	5410	6445
	वन उप प्रभाग	बेरीनाग	4014.48	150442	154456
	कुल योग		4270.28	272905	277175

श्रोत: Management Plan of Pithouragrh Forest Division 2011-22

9. वनों से लाभ

- वन राज्य की आय का प्रमुख श्रोत है इसमें कई प्रकार की लकड़ियाँ, औषधियाँ तथा कई अन्य उपयोगी वस्तुएं प्राप्त होती हैं।
- वनों से हमें कई प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष तत्व से लाभ प्राप्त होता है, जो मानव के लिए महत्वपूर्ण हैं। वन, वायु प्रदूषण पर नियन्त्रण तथा तापमान को नियंत्रित कर जलवायु में संतुलन लाता है।
- वनों से हमें कुटीर उद्योगों के लिए कच्चा माल प्राप्त होता है, जो क्षेत्र में आर्थिक विकास के लिए सहायक होता है।
- वन भू-कटाव को रोकने में सहायक होता है। यह मृदा को अपनी जड़ों से जकड़े रखते हैं जिससे मृदा अपरदन कम होता है।

- वनों के कटाव से भूस्खलन अधिक होता है जो क्षेत्र में आपदा का रूप ले लेती है। जिससे मानव-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है तथा जान माल में भारी क्षति होती है।
- जनपद में अधिकांश ग्रामीण जनसंख्या होने के कारण वनों का ईंधन के रूप में प्रयोग अधिक होता है तथा आजीविका का श्रोत है।

10. वन संरक्षण नीतियाँ तथा योजनाएँ

सन 1865 में वनों से सम्बन्धित भारत का पहला कानून भारतीय वन अधिनियम पास किया गया। इस अधिनियम के बाद वनों की कटाई में कमी आई। इसके बाद 1884 में वनों के वैज्ञानिक प्रबन्धन के लिए कार्य योजना वन विभाग लागू किया गया। स्वतन्त्रता के बाद 1948 में केन्द्रीय वानिकी परिषद की स्थापना

की गयी तथा वनों के संरक्षण, विस्तार, रखरखाव और उनके लाभों के प्रति लोगो में जागरूकता उत्पन्न करने के लिए 1950 से देश भर में वन महोत्सवों के आयोजन शुरू किये गये। वनों के संरक्षण, विकास एवं प्रशासन के नये सिरे से चलाने के लिए 1952 में नई राष्ट्रीय वन नीति बनाई गयी और कुछ परिवर्तन के साथ 1998 में संशोधित राष्ट्रीय वन नीति बनाई गयी।

- **अपना गांव - अपना वन** – यह योजना गावों को वनों से जोड़ने के लिए चलाई जा रही है। इसके तहत वन भूमियों से अतिक्रमण हटाकर उसपर वृक्षारोपण किया जा रहा है।
- **नागरिक एवं सोयम वन विकास योजना** – इस योजना के अंतर्गत नागरिक एवं सोयम वनों को वन विभाग को हस्तांतरित करके उसका वैज्ञानिक ढंग से प्रबंध किया जाता है।
- **वन पंचायत**- वनों के विकास और सुरक्षा के लिए राज्य में अब तक लगभग 12168 वन पंचायतों का गठन किया गया है। जो की लगभग 5.5 लाख हेक्टेयर वनक्षेत्र का संरक्षण कर रही है। जनपद पिथौरागढ़ में वन पंचायतों की संख्या वर्तमान में 1566 है।
- **नर्सरियां**- वृक्षारोपण की तकनीकी को उच्चस्तरीय बनाने के लिए जनपद में नर्सरियों की स्थापना की गयी है। तथा क्षेत्र में पौधा रोपण नीति लागू की गयी है।

11. सुझाव

जनपद में वन विकास एवं संरक्षण के लिए सुझाव निम्न है-

- क्षेत्र में सामाजिक वानिकी तथा कृषि वानिकी को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- क्षेत्र में वनों के कटाव को रोकने के लिए सख्त कानून बनाना चाहिए तथा वनों को काटने पर उचित कार्यवाही की जानी चाहिए।
- पर्यावरणीय शिक्षा तथा वनों से सम्बन्धित शोध कार्य को बढ़ावा देना चाहिए।
- लोगो को वन विनाश से होने वाले दुष्प्रभाव के लिए जागरूक करना चाहिए।
- वन विभाग में सूचना के आदान- प्रदान के लिए कम्प्यूटर आधारित सूचना तंत्र का विकास करना चाहिए।
- क्षेत्र में वन संरक्षण से सम्बन्धित अनेक योजनाये, कार्यक्रम संस्थानों का निर्माण करना चाहिए।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में जनपद पिथौरागढ़ में वनों की स्थिति सन्तोषजनक है। पुराने वन रिपोर्टों (2021) तथा नये रिपोर्ट (2023) के अनुसार जनपद में वनों के प्रतिशत में केवल 0.68 % की वृद्धि हुई है। जनपद में वनों का भारी कटाव किया गया है तथा वनों के आग की घटना में बढ़ोत्तरी हुई है। जिससे जलवायु परिवर्तन की समस्या उत्पन्न हुई है। मानव द्वारा वनों तथा क्षेत्र में पाई जाने वाली जड़ी- बूटियों का अवैध रूप से

दुरुपयोग किया गया है। वर्तमान समय में जनसंख्या वृद्धि तथा अधिवास फैलाव एवं विकास के लिए वनों का अंधाधुंध कटाव किया जा रहा है। जिससे क्षेत्र में आपदा की स्थिति में वृद्धि हुई है तथा पर्यावरण असंतुलन पैदा हो गया है।

सन्दर्भ

1. मैठाणी, प्रो० डी० डी०, प्रसाद, डा० गायत्री, नौटियाल, डा० राजेश, उत्तराखंड का भूगोल, 2010
2. त्रिपाठी, केशरी नन्दन, उत्तराखंड एक समग्र अध्ययन
3. परिहार, डी० डी एस, शोध रिपोर्ट, उत्तराखंड में वन संसाधनों का अध्ययन: तहसील धारचूला से एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
4. फारेस्ट सर्वे ऑफ़ इंडिया 2023
5. Management plan of pithouragrh forest Division 2011-2021